 ISSN : 2348-0033 (Online) | ISSN : 2249-4944 (Print)

vkn'k fo|kFkh fuek.k gr lq>ko% ,d v/;;u

[1]Mk0 'k'kh ukfV;ky] [2]iqIik dqekj

[1]इतिहास विभागाध्यक्षा, इ0 कॉ0, जे0 वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर

[2]गो0 कृ0, रामपुर, मनिहारान, सहारनपुर

'kks/k&i= lkj

वर्तमान समय में विद्यार्थी के गिरते उच्च आदर्शवादी गुणों को पुनः स्थापित किया जा सकता है। इसके लिए परिवार, शिक्षक, विद्यालय, पाठ्यक्रम एवं स्वयं विद्यार्थी को सुधार की आवश्यकता है।

ifjp;&

भारत वर्ष में शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। ज्ञान की ज्योति सर्वप्रथम इसी पावन भूमि पर प्रज्जवलित हुई थी। देश और काल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही शिक्षा पद्धति का स्वरूप निर्धारित होता है। भारतीय शिक्षा का स्वरूप अपनें प्रारम्भिक काल में बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक केन्द्रित था। विधार्थी से यह अपेक्षा की जाती थी कि, वह अपने कुल, समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति का रक्षक बन सके। परिणामतः वे विद्यार्थी इस कसौटि पर खरे भी उतरते थे। युवा आदर्श स्वामी विवेकानंद जी ने भी शिक्षा का उद्देश्य प्रकट किया है– ßeu"; dk fuekZ.kÞ1

परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी समाज में आदर्श स्थापित करने के स्थान पर अपना स्तर गिराता जा रहा है। जहां महाभारत काल में एकलव्य ने अपने गुरू द्रोणाचार्य को अपने दाहिने हाथ का अॅगूठा गुरू दक्षिणा में दे दिया था, वही आज हमें समाचार पत्रों में गुरू जी के साथ विद्यार्थियों का झगड़ा एवं अन्य समाज विरोधी कार्य पढनें को मिलते है। इन दुष्परिणामों के लिए केवल विद्यार्थी ही जिम्मेदार नहीं है वरन् अन्य कारण भी है। यदि हम कुछ महत्वपूर्ण सुझाव अपना लेते हैं तो ये कारण स्वतः ही दूर हो जायेगें फिर समाज एवं राष्ट्र को आदर्श विद्यार्थी प्राप्त हो सकते है।

vkn'k fo|kFkh fuek.k grq lq>ko&

1- ifjokj%&परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। परिवार में मुख्य रूप से बच्चे की माता व पिता होते है। बच्चे के जन्म से पूर्व ही माता–पिता को अपनें आदर्श विचार रखने चाहिए। सात्विक भोजन करना चाहिए। गर्भवती माता महापुरूषों का चिन्तन व धार्मिक साहित्य का अध्ययन करते हुए मानसिक तनाव से दूर रहे।

बालक को बचपन में ही महापुरूषों की आदर्श कहानियां सुनानी चाहिए, जिससे वे भी उन महापुरूषों जैसा बनने की कोशिश करे। वीर माता जीजाबाई शिवाजी को महाभारत से भीम, अर्जुन की कहांनियां सुनाती थी। अतः वे भी बचपन से ही भीम, अर्जुन जैसे बनने की कल्पना करने लगे थे। आगे चलकर शिवाजी ने इतिहास में जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया उसके पीछे एक महान कारण उनकी आदर्श माता जीजाबाई का योगदान भी है। ßlUrkuks dk mÙke fo|k] f'k{kk] xq.k] deZ vkj LoHkko:Ik vkHkw"k.kks dk /kkj.k djuk ekrk&firk] vkpk;Z vkj lEcfU/k;ksa dk eq[; deZ gSAÞ2

2- f'k{kd%& प्राचीन काल में शिक्षक को गुरू व आचार्य कहा जाता था। गुरू का अर्थ है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए और आचार्य का अर्थ है, कि जिसका आचरण अनुकरणीय हो। अध्यापक को विधार्थी के साथ मृदु व्यवहार करना चाहिए तानाशाही नहीं। महात्मा गांधी जी ने शिक्षको को कहा था ßmUgsa v/;kiu] v/;kiu&dk;Z dks fy, viuk vfuok;Z iq.e dk dkj.k gh djuk pkfg,AÞ3 विद्यार्थी, शिक्षक को आदर्श मानता है। जिन बातों पर शिक्षक विद्यार्थी को चलने के लिए प्रेरित करता है उन पर उसे स्वंय चलकर दिखाना चाहिए। तभी वह बालक पर एक अमिट छाप छोड़ सकता है। संसार में पिता व गुरू ही दो ऐसे व्यक्तित्व होते है जो बालक को अपने से अधिक उन्नति करते देखकर खुश होते है। चौथी शताब्दी ई0पू0 में आचार्य चाणक्य ने अपने शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का सम्राट बना दिया था। गुरू तो वह शिल्पकार है जो एक पत्थर को तराशकर ऐसी मूर्ति बना देता है जिसकी पूजा मन्दिर में होती है।

3- fo|ky;%& विद्यालय विद्या का मन्दिर होता है। ये शान्त वातावरण में प्रकृति की गोद में होने चाहिए। आधुनिक आवश्यक सुविधाओं से युक्त हो। ये राजनीति के अखाडे नहीं बनने चाहिए। प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात् प्रार्थना स्थल पर ही कोई एक शिक्षक, नैतिकता पूर्ण व शिक्षाप्रद व्याख्यान दे। विद्यालय में समय–समय पर वाद–विवाद प्रतियोगिताएँ व खेल आयोजित हो। प्रतिवर्ष पत्रिका का प्रकाशन भी होना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय का एक ही आदर्श हो जैसा– ßukyUnk fo'ofo|ky; dk vkn'k Fkk Kku iklr djuk dh LorU=rkAÞ4

4- ikB~;Øe%& आज विद्यार्थी पर पाठ्यक्रम का बोझ हावी है। यह कम होना चाहिए जिसको पूरी मेहनत से पढ़ा व पढ़ाया जा सके। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री अवश्य होनी चाहिए। जिससे नैतिक गुणों का विकास साथ–साथ होता जाए। पाठ्यक्रम रूचिकर व आसान से कठिन की ओर होना चाहिए।

5- fo|kFkh%& विद्यार्थी को जागरूक रहकर आदर्श गुण अपनानें चाहिए। विद्यार्थी शिक्षक को अपना आध्यात्मिक पिता माने व अध्यापक भी बालक को अपना आध्यात्मिक पुत्र समझे। तभी वे दोनों सही रूप में समर्पण की भावना से सीख और सीखा पायेगें। विद्यार्थी का केवल व केवल एक ही लक्ष्य होना चाहिए *fo|k v/;;uA^

विद्यार्थी को जबरदस्ती जागकर पढना नहीं चाहिए जब निन्द्रा आये थोड़े समय सोकर फिर पढायी में लग जाना चाहिए। विद्यार्थी जिस पाठ को याद करे उसे 24 घण्टे के अन्दर दोहराये और फिर एक सप्ताह के अन्दर पुनः याद करके, वह स्थायी रूप से मस्तिष्क में अंकित हो जाता है। अपने पाठ्यक्रम के मुख्य–मुख्य बिन्दु एक डायरी में लिखकर याद करने से परीक्षा में सफलता अवश्य मिलती है।

fu"d"k%& यदि उपरोक्त बिन्दुओं को समझकर और उन पर विचार कर अपनाया जाये तो समाज में फैली आदर्श विद्यार्थी की कमी को पूरा किया जा सकता है। जब विद्यार्थी आदर्श होगा तो हमारा समाज, हमारा देश अपने आप आदर्श हो जायेगें। हमारे देश में जब आदर्श विद्यार्थी देश के कर्णधार बनकर उन पदों पर पहुंचेगें जहां से देश की नीति निर्धारित होती है, और उसको कार्य रूप में पूरी ईमानदारी व सत्यनिष्ठा के साथ लायेगें तो हमारा देश अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त करने में सक्षम होगा।

lUnHkZ xzUFk lwph

ewy xzUFk

सरस्वती, स्वामी दयानंद, – सत्यार्थ प्रकाश

lgk;d xzUFk

1. सेठ, कीर्ति देवी,– भारतीय शिक्षा का दार्शनिक आधार, (गाजियाबाद–2001)
2. गांधी, महात्मा,– मेरे सपनों का भारत, (दिल्ली –2010)
3. महाजन, विद्याधर,– प्राचीन भारत का इतिहास, (दिल्ली –2004)
4. लुणिया, बी0एन,.–भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का इतिहास (आगरा–2001)
5. लाल, रमन बिहारी,–भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ (मेरठ–2007)